ISSN : 2277-2359

Nibandha Mala

निबंधमाला

(A Multidisciplinary Refereed Research Journal, UGC-CARE Listed)

वर्ष 2, अंक 12 अक्टूबर 2020

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान

56-57, जनकपुरी नई दिल्ली-110056

Scanned with CamScanner

- छायावाद की वैचारिक परिभूमि और निराला की काव्य-भाषा 138–149

  डा. विवेकानंद उपाध्याय

- समकालीन हिन्दी उपन्यासों में स्त्री दृष्टि और कथा भाषा 150–159

  डॉ0 हरीश कुमार

- उत्तर प्रदेश व बिहार के उत्खनित नवपाषाणकालीन पुरास्थल 160–166

  दिव्या सिंह

- वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों में बुन्देली लोक संस्कृति का वैभव 167–172

  डॉ. राजेन्द्र यादव

Scanned with CamScanner

वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों में बुन्देली लोक संस्कृति का वैभव

डॉ. राजेन्द्र यादव
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
470003

सारांश :

बुंदेलखंड के जीवन संस्कृति और इतिहास का प्रामाणिक अध्ययन वृन्दावन लाल वर्मा के उपन्यासों में स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है ।बुन्देली भाषा में प्रयोग होने वाले शब्दों वाक्यों को यहाँ वृन्दावनलाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यासों में उनके उपन्यासिक पात्रों की भाषा में जीवंत रूप में देखा जा सकता है ।बुंदेलखंड के इतिहास और उससे जुड़े घटनाक्रम पर केन्द्रित उपन्यासों के ग्रामीण चरित्रों की भाषा यहाँ ठेठ बुन्देली है ।बुंदेलखंड पर केन्द्रित अधिकाँशउपन्यासों में बुन्देली लोक जीवन और बुन्देली लोक संस्कृति को उसके ऐतिहासिक सन्दर्भों के अनुकूल अभिव्यक्त किया गया है ।वृन्दावन लाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यास हिन्दी साहित्य और भारतीय समाज के लिए इसलिये महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इन उपन्यासों में भारतीय समाज और राजनीति के साथ भारतीय संस्कृति को पुनः स्थापित करने की रचनात्मक कोशिश की गई है ।अंग्रेजो ने जिस भारतीय इतिहास और संस्कृति का जो पराभव अपने दस्तावेजो में लिखा था, उसके विपरीत भारतीय संस्कृति और समाज को इन उपन्यासों में सही रूप में चित्रित किया गया है ।

बीज शब्द : बुंदेलखंड, साहित्य, समाज, लोक, संस्कृति, इतिहास, भाषा, सरोकार, राजनीति, पुनर्जागरण आदि ।

प्रस्तावना :

बुंदेलखंड के झाँसी जिले के मउरानीपुर में जन्मे वृन्दावन लाल वर्मा हिन्दी के ऐसे ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं जिन्होंने अपने उपन्यासों में बुंदेलखंड के इतिहास समाज और संस्कृति के साथ बुन्देली भाषा को नयी अभिव्यक्ति दी है ।वर्मा जी के बुंदेलखंड पर केन्द्रित अधिकाँशउपन्यासों में बुन्देली लोक जीवन और बुन्देली लोक संस्कृति को उसके ऐतिहासिक सन्दर्भों के अनुकूल अभिव्यक्त किया गया है ।उनके उपयासों की भाषा खड़ीबोली हिन्दी है पर उनके अधिकाँश उपन्यासों में अनेक पात्र ठेठ बुन्देली भाषा और बुन्देली संस्कृति में रचे-बसे हैं ।उनका गढ़कुंडार, झाँसी की रानी, देवगढ़ की मुस्कान, कीचड़ और कमल , कचनार, मुसाहिब जू , आदि सभी उपन्यासबुन्देली लोक समाज एवं बुन्देली लोक संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों के राजनैतिक ,सामाजिक और सांस्कृतिक सरोकारों पर केंद्रित हैं ।बृहद बुंदेलखंड के विभिन्न क्षेत्रों के क्षेत्रीय राजाओं, सामंतों सहित छोटे राज्यों के राजनैतिक सामाजिक घटनाक्रम को वृन्दावन लाल वर्मा ने अपने उपयासों की विषयवस्तु का आधार बनाया है ।बुंदेलखंड के जीवन संस्कृति और इतिहास का प्रामाणिक अध्ययन वृन्दावन लाल वर्मा के उपन्यासों में स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है ।बुन्देली भाषा में प्रयोग होने वाले शब्दों वाक्यों को यहाँ वृन्दावनलाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यासों में उनके उपन्यासिक पात्रों की भाषा में जीवंत रूप में देखा जा सकता है ।बुंदेलखंड के इतिहास और उससे जुड़े घटनाक्रम पर केन्द्रित उपन्यासों के ग्रामीण चरित्रों की भाषा यहाँ ठेठ बुन्देली है ।बुन्देली संस्कृति का वस्तुजगत यहाँ अपने मूल रूप में अर्थवान हो उठता है ।

वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त ऐतिहासिक स्थान, घटनाएं, मार्ग, राजाओं सामंतों जागीरदारों से जुड़े प्रसंग और चरित्र तथा नाम वास्तविक हैं ।इस अर्थ में वर्मा जी के उपन्यासों के सन्दर्भ रचना की भावभूमि पर अपनी ऐतिहासिकता की पहचान कराते हैं ।ज्ञातब्य है की वृन्दावनलाल वर्मा के पूर्व हिन्दी उपन्यास जगत में बुंदेलखंड के महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाक्रम का कोई स्थान नहीं था ।मुगलों और अंग्रेजों की ख़िलाफ़त के कारण बुंदेलखंड को अपनी पहचान के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ा ।जहांगीर के वक्त पहलीबार बुंदेलखंड को मुग़ल सल्तनत में पहचान नसीब हुई ।ओरछा बुंदेलखंड के अधीन दतिया के जागीरदार वीरसिंह बुन्देला ने दतिया के जंगलों में से होकर जहांगीर की बगावत का दमन करने जा रही अकबर की विशाल सेना के प्रमुख अबुलफजल का सर काटकर सलीम-जहांगीर को भेंट कर दिया था ।यहीं से मुग़ल सल्तनत में बुंदेलखंड को तरजीह मिलनी प्रारम्भ हुई ।पहलीबार मुग़ल साम्राज्य में बुंदेलखंड को सम्मान मिला ।लेकिन जहाँगीर के बाद बुंदेलखंड का मुग़ल सल्तनत में धीरे-धीरे अविश्वास बढ़ता

Scanned with CamScanner